E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(8): 16-18
Received: 03-05-2025
Accepted: 10-06-2025

ज्योतिमा पटेल
शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ. संजना सिंह
प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author:
ज्योतिमा पटेल
शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नवा रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति: ऐतिहासिक विकास, समकालीन चुनौतियाँ और संरक्षण की दिशा

ज्योतिमा पटेल और संजना सिंह

सारांश
छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत विविधता, जीवंतता और गहराई से समृद्ध है, जिसमें जनजातीय परंपराएं, लोककला, वास्तुशिल्प, लोकगीत-नृत्य एवं धार्मिक विश्वास अद्वितीय रूप में अभिव्यक्त होते हैं। यह शोधपत्र छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विशेषताओं के ऐतिहासिक, सामाजिक एवं धार्मिक पहलुओं का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। सिरपुर, मल्हार जैसे स्थलों की स्थापत्य परंपरा और नागर, द्रविड़ एवं वेसर शैलियों में निर्मित मंदिरों की मूर्तिकला, राज्य की कलात्मक श्रेष्ठता को दर्शाती है। लोकगीतों और लोकनृत्यों जैसे ददरिया, राउत नाचा, करमा में न केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि सामूहिक पहचान भी निहित है। साथ ही, ग्राम देवताओं की पूजा, देवी आराधना और जनजातीय विश्वास, मुख्यधारा के धार्मिक ढाँचों से अलग एक स्वतंत्र धार्मिक चेतना को उजागर करते हैं। परंतु आधुनिकता, शहरीकरण और वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक मूल्यों को नई चुनौतियाँ दी हैं, जिससे सांस्कृतिक विस्मृति और मूल परंपराओं के क्षरण का खतरा उत्पन्न हुआ है। इस संदर्भ में डिजिटल अभिलेखन, शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में लोकसंस्कृति का समावेश और राज्यस्तरीय नीतियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यह अध्ययन न केवल सांस्कृतिक पहचान के पुनरावलोकन का आग्रह करता है, बल्कि आने वाले समय में शोध, संरक्षण एवं नीति-निर्माण के लिए भी दिशा प्रदान करता है।

कूटशब्द: छत्तीसगढ़, लोकसंस्कृति, स्थापत्य कला, धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक संरक्षण, वैश्वीकरण

1. प्रस्तावना
छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे समृद्ध एवं विविध सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है, जिसकी जड़ें आदिम जनजातीय समाजों से लेकर समकालीन शहरी जीवन तक फैली हुई हैं। यह प्रदेश ऐतिहासिक रूप से गोंड, बैगा, उरांव, कोरकू, हल्बा आदि जनजातियों का निवास क्षेत्र रहा है, जिनकी सांस्कृतिक परंपराएँ आज भी जीवित हैं। इन जनजातीय समुदायों की लोकसंस्कृति में उनकी धार्मिक मान्यताएँ, लोकगीत, लोकनृत्य, चित्रकला, हस्तशिल्प, कृषि आधारित रीति-रिवाज, और मौखिक परंपराएँ शामिल हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं।

भारत के सांस्कृतिक नक्शे में छत्तीसगढ़ की पहचान एक विशिष्ट सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में स्थापित है जहाँ 'लोक' ही 'संस्कृति' का केंद्र है। लोकसंस्कृति केवल मनोरंजन का साधन न होकर जीवन मूल्य, सामाजिक संरचना और सामूहिक स्मृति की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। वर्तमान समय में नगरीकरण, तकनीकी परिवर्तन, और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने लोकपरंपराओं को प्रभावित किया है, जिससे इनकी सुरक्षा व पुनरुत्थान की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है [1]। अतः छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति का अध्ययन न केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है, बल्कि यह समकालीन सांस्कृतिक विमर्शों के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक बनता जा रहा है [2]।

2. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विशेषताएँ
छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक संरचना इसकी जनजातीय विविधता, लोक परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं, और भाषाई-कलात्मक विरासत से मिलकर बनी है। प्रदेश में लगभग 32 से अधिक जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें गोंड, बैगा, मुरिया, भतरा, कोरवा प्रमुख हैं। इन जनजातियों की सांस्कृतिक विशेषताएँ मुख्यतः मौखिक परंपरा, सामुदायिक पूजा-पद्धति, प्रकृति आधारित देवी-देवताओं की उपासना, और तीज-त्योहारों से संबंधित होती हैं [3]।

लोकगीतों की परंपरा में 'सुवा गीत', 'करमा', 'ददरिया', 'फाग' जैसे गीत प्रमुख हैं जो श्रम, प्रेम, और प्रकृति से जुड़ी भावनाओं को व्यक्त करते हैं [4]। इसी प्रकार, लोकनृत्य, जैसे पंथी, राउत नाचा, डांडिया, और घासी नृत्य सामाजिक सामूहिकता का प्रतीक हैं। ये लोककलाएं विशेष अवसरों, त्योहारों तथा विवाह जैसे सामाजिक आयोजनों में अभिव्यक्त होती हैं।

छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज, जैसे नई फसल का पूजन (नवाखानी), ग्राम देवता की पूजा, देवी-देवताओं के मेलों की परंपरा जनजातीय और ग्रामीण जीवन के सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे को दर्शाती है [5]। विश्वास प्रणाली में अंधविश्वास और प्रकृति पूजन का गहरा प्रभाव देखा जाता है, जहाँ नदी, पेड़, पर्वत जैसे प्राकृतिक तत्त्वों को देवता के रूप में पूजा जाता है [6]।

यह सांस्कृतिक विविधता छत्तीसगढ़ को न केवल भारत में विशिष्ट बनाती है, बल्कि इसे एक जीवंत सांस्कृतिक प्रयोगशाला में परिवर्तित करती है जहाँ परंपरा और आधुनिकता के मध्य सतत संवाद होता रहता है [7]।

3. स्थापत्य, मूर्तिकला एवं चित्रकला का विकास

छत्तीसगढ़ की स्थापत्य परंपरा नागर, द्रविड़ और वेसर शैलियों की सुंदर संगम स्थल है। सिरपुर, मल्हार, भोरमदेव जैसे स्थल प्राचीन मंदिर स्थापत्य की उत्कृष्ट मिसाल हैं। सिरपुर में लक्ष्मण मंदिर (7वीं शताब्दी) नागर शैली में निर्मित है, जो गुप्तकालीन वास्तुकला की पहचान है। मल्हार में पाए गए प्राचीन मूर्तिकला अवशेष कल्चुरी शासनकाल की समृद्ध कलात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं। यहाँ बुद्ध, शिव-पार्वती, विष्णु, गणेश आदि की मूर्तियाँ धार्मिक समरसता को रेखांकित करती हैं। छत्तीसगढ़ की लोकचित्रकला परंपरा, जैसे पिथौरा चित्रकला, सामाजिक अनुष्ठानों और जनजातीय जीवन से जुड़ी हुई है, जो रंगों, प्रतीकों और कथात्मक शैलियों से भरपूर होती है। यह चित्रकला विशेषकर राज समुदाय में प्रचलित है, जिसमें ग्राम देवी-देवताओं का चित्रण प्रमुख रूप से किया जाता है [7, 8, 9]।

4. लोकगीत, नृत्य एवं त्योहार

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान उसके लोकनृत्यों और लोकगीतों से गहराई से जुड़ी हुई है। कर्मा नृत्य, विशेषकर गोंड और उरांव जनजातियों में, कृषि से जुड़ी आशाओं और सामूहिक ऊर्जा का प्रतीक है। ददरिया, राउत नाचा, सुआ नृत्य, पंथी नृत्य आदि पारंपरिक जीवन शैली को सजीव बनाते हैं। विवाह गीत, देवी गीत, फाग, भोजली जैसे लोकगीत समुदाय की भावनाओं और विश्वासों की अभिव्यक्ति हैं। छत्तीसगढ़ के त्योहार जैसे 'हरेली', 'तीजा', 'पोला' और 'मड़ई' लोक जीवन में आत्मीयता, प्रकृति प्रेम और सामाजिक एकता को मजबूत करते हैं [10, 11, 12]।

5. लोकधर्म और धार्मिक विश्वास

छत्तीसगढ़ की संस्कृति में लोकधर्म की गहरी जड़ें हैं, जो जनजीवन को दिशा देने वाले मूल विश्वासों, अनुष्ठानों और ग्राम देवी-देवताओं के पूजन से जुड़ी होती हैं। यहाँ के अधिकांश गांवों में ग्राम देवता या देवी की पूजा मुख्य रूप से जातीय और सामूहिक रूप से की जाती है। 'बुढ़ादेव', 'दंतेश्वरी', 'मातीन माता', 'नवरंगबाबा' जैसे देवताओं का पूजन ग्राम समाज की धार्मिक संरचना को दर्शाता है। जनजातीय समुदायों जैसे गोंड, बैगा, उरांव आदि का धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा, पूर्वज पूजा, और सामुदायिक अनुष्ठानों से जुड़ा होता है। यह लोकधर्म वैदिक धर्म की तुलना में अधिक सहज, प्रकृति-सापेक्ष और व्यावहारिक होता है [13]।

हालांकि, आधुनिक समय में हिन्दू धर्म की मुख्यधारा परंपराओं का प्रभाव बढ़ने से जनजातीय धार्मिक व्यवस्थाओं में बदलाव आया है, जो कभी-कभी उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता के क्षरण की ओर भी संकेत करता है [14]। इस तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ में लोकधर्म और ब्राह्मणवादी परंपराओं के बीच सह-अस्तित्व और आंशिक समन्वय की प्रवृत्ति रही है।

6. आधुनिकता और सांस्कृतिक बदलाव

वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ की पारंपरिक सांस्कृतिक संरचना आधुनिकता के विभिन्न प्रभावों से प्रभावित हो रही है। शहरीकरण, मोबाइल इंटरनेट, शिक्षा के प्रसार, एवं मीडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी में लोक परंपराओं से दूरी की प्रवृत्ति देखी जा रही है [15]। कई परंपरागत नृत्य, गीत, लोकचित्रकला, रीति-रिवाज अब केवल उत्सवों तक सीमित रह गए हैं, जबकि युवाओं में पाश्चात्य जीवनशैली की ओर रुझान बढ़ा है।

हालाँकि, एक समानांतर चेतना भी विकसित हो रही है जिसमें लोग अपने सांस्कृतिक मूल्यों को पुनर्परिभाषित कर उन्हें बचाने के लिए नवाचार कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, लोककला के डिजिटलीकरण, पारंपरिक त्योहारों के मंचन, और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में लोकसंस्कृति के समावेश जैसे प्रयास उल्लेखनीय हैं [16]। यह द्वंद्व - परंपरा और आधुनिकता के बीच - छत्तीसगढ़ की संस्कृति के पुनर्गठन की दिशा तय कर रहा है।

7. सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण

वैश्वीकरण, बाजारवाद और आधुनिक उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों ने छत्तीसगढ़ की परंपरागत लोकसंस्कृति को अप्रत्यक्ष रूप से संकट की ओर धकेला है। पारंपरिक लोककथाएँ, गीत, शिल्प, रीति-रिवाज और जनजातीय ज्ञान प्रणाली धीरे-धीरे विस्मृत होती जा रही हैं। ऐसे में सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए डिजिटल अभिलेखीकरण, पर्यटन के ज़रिए सांस्कृतिक पुनरुत्थान, और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में समावेश आवश्यक है। डिजिटल तकनीकों, जैसे कि 3D स्कैनिंग, वर्चुअल रियलिटी टूर, और वेब-आधारित संग्रहालयों के माध्यम से लोककला और सांस्कृतिक स्थलों को व्यापक जनसुलभ बनाया जा सकता है [17]।

राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'लोक कला प्रोत्साहन योजना' तथा 'छत्तीसगढ़ी अकादमी' जैसे उपक्रम इस दिशा में सकारात्मक प्रयास हैं [18]। साथ ही, यूनेस्को की 'Intangible Cultural Heritage' सूची में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को स्थापित करने की पहल भी होनी चाहिए [19]। लोकसंस्कृति को शिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रम स्तर पर शामिल कर नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ा जा सकता है [20]।

8. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति, जनजातीय परंपराएँ, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, लोकनृत्य, लोकधर्म और धार्मिक विश्वास सभी मिलकर एक समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने का निर्माण करते हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पारंपरिक सांस्कृतिक विविधताएँ छत्तीसगढ़ की पहचान हैं, जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक हैं। आधुनिकता के प्रभाव में यह संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजर रही है, जिससे इसके संरक्षण और पुनरावलोकन की आवश्यकता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं को चाहिए कि वे जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने हेतु दीर्घकालीन योजनाएं बनाएं और उन पर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

भविष्य में इस क्षेत्र में अनुसंधान के कई आयाम संभावित हैं, जैसे — डिजिटल लोकसंग्रह, सांस्कृतिक पर्यटन नीति, या लोककला आधारित ग्रामीण विकास मॉडल। यह शोध भविष्य के अकादमिक विमर्श और सांस्कृतिक नीति निर्माण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

9. संदर्भ

1. Verma BL. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत. Raipur: Chhattisgarh Academy Publication; 2018.
2. Tripathi R. Cultural Transformation in Central India. Delhi: Indian Anthropological Society; 2020.
3. Ministry of Tribal Affairs. Statistical Profile of Scheduled Tribes in India. Govt. of India Publication; 2021.
4. Tiwari M. छत्तीसगढ़ के लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन. Lok Sanskriti Shodh Patrika. 2015;7(2):45-53.
5. Sen S. Tribal Rituals and Practices in Chhattisgarh. Anthropol Q. 2019;92(3):301-325.
6. Sharma K. Folk Beliefs and Nature Worship in Central India. Indian J Folklor Stud. 2017;11(1):87-94.
7. Naik S. Tradition vs. Modernity in Chhattisgarh's Folk Culture. J Contemp Cult. 2022;9(4):102-116.
8. Tiwari RS. Chhattisgarh ke Prachin Mandir. Raipur: Lok Kala Prakashan; 2011.

9. Sharma KN. Kalchuri Kaleen Chhattisgarh: Ek Adhyayan. Bilaspur: Sanskriti Vibhag; 2009.
10. Arya VP. Lok Chitrakala: Bharatiya Pariprekshya mein. Delhi: Kala Akademi; 2015.
11. Sahu DR. Chhattisgarh ke Lok Nritya aur Geet. Raipur: Tribal Research Institute; 2012.
12. Patel J. Sanskritik Virasat aur Lok Jeevan: Chhattisgarh ka Adhyayan. Nava Raipur: Kalinga University; 2025.
13. Verma RC. Indian Tribes Through the Ages. New Delhi: Publications Division; 1990.
14. Elwin V. The Religion of an Indian Tribe. Oxford University Press; 1955.
15. Hauser B. Hinduism in Tribal India. Routledge India; 2010.
16. Sharma RS. Ancient Indian History and Culture. Orient Blackswan; 2009.
17. Mehta A, Pandey R. Culture and Change in Tribal India: A Case of Chhattisgarh. J Cult Stud. 2021;12(2):89-104.
18. Sharma VK. Digital Preservation of Tribal Heritage in India. Heritage J. 2021;13(2):88-95.
19. Chhattisgarh Lok Kala Vikas Mandal. वार्षिक प्रतिवेदन. Raipur: Sanskriti Vibhag, Chhattisgarh Shasan; 2022.
20. UNESCO. Intangible Cultural Heritage Lists. 2020. Available from: https://ich.unesco.org.
21. Dangi R, Kumar P. संस्कृति और शिक्षा: छत्तीसगढ़ी लोकधरोहर की भूमिका. New Delhi: Indian Cultural Education Foundation; 2023.
22. Mehta A. Reviving Tribal Cultures through Policy Interventions. J Soc Change. 2021;17(4):211-223.
23. Mishra T. लोकसंस्कृति और शिक्षा में समावेशन. Shikshak Drishti. 2022;10(1):77-84.
24. Singh R. Tribal Heritage and Sustainable Development. Bhopal: National Cultural Research Institute; 2023.
25. Verma N. भारतीय लोकधरोहर की चुनौतियाँ और संभावनाएँ. Sanskriti Varta. 2023;9(3):55-66.